वार्षिक मूल्य 50 रूपये

धर्म जीवन

अगस्त – 2023

- आत्म ज्ञान ही सर्वश्रेष्ठ ज्ञान है।
  - अपने अस्तित्त्व का ज्ञान
    - तुम किस अवस्था में हो?
- सद्गुरु की कृपा से एक गला सड़ा.....
  - एक वा दूसरे नीच राग की गुलामी से.....
    - भगवान् देवात्मा के परम उपकार
- शुभ संग्राम

"आत्मानं सततं रक्षेत"

"आत्मानं सततं रक्षेत" देव धर्म प्रवर्तक की यह शिक्षा है, कि केवल नीच वासनाओं की तृप्ति और नीच सुखों के लिए न जिओ, और उन्हें अपने जीवन का लक्ष्य न बनाओ; नहीं तो नाना प्रकार की नीच गतियों को प्राप्त होकर और अपनी जीवनी शक्ति को धीरे धीरे खोकर और नाना दुःखों के भागी बनकर एक दिन अपने आत्मा समेत बिलकुल नष्ट हो जाआगे। आत्मा को मुख्य जानो और उसके जीवन के सम्बन्ध में उदासीन मत रहो, किन्तु उसके विनाश और विकास के सम्बन्ध में नीच और उच्च गतियों का अति दुर्लभ सत्य ज्ञान लाभ करके और जीवन स्रोत से जुड़कर जीवन लाभ करने का उपाय करो। उनमें से मोक्ष दायक उच्च घृणा शक्तियों को लाभ करके नीच गतियों से मोक्ष पाओ। विकासकारी अनुराग शक्तियों को लाभ करके उच्च अथवा धर्म जीवन में विकास लाभ करो। ऐसी अवस्था में पहुंचने से तुम्हें जो शान्ति और विविध प्रकार का आनन्द वा रस मिलेगा, वह जैसे अति उच्च और पवित्र होगा, वैसे ही वह तुम्हारे आत्मा के लिए भी सब प्रकार से हितकर होगा। फिर अन्य सब सुख जो उच्च जीवन के विरोधी न हों, वह भी तुम्हारे लिए हितकर बन जाएंगे। नहीं तो केवल नीच वासनाओं और नीच सुखों के पीछे जाकर और नीच गति परायण बनकर जब एक दिन तुम अपने सारे अस्तित्त्व का ही नाश कर लोगे, तो फिर कभी भी तुम न कोई सुख पा सकोगे, और न कोई रस। इसीलिए कहा गया है, कि "आत्मानं सततं रक्षेत्" अर्थात् अपने आत्मा के जीवन की सदा रक्षा करनी चाहिए। सच्चे और पूर्ण धर्मावतार और जीवन दाता के शरणागत होकर उनकी जीवन–दायिनी ज्योति और शक्ति के लाभ करने से प्रत्येक अधिकारी आत्मा को उपरोक्त मोक्ष और उच्च जीवन की प्राप्ति हो सकती है।

स्वास्तित्त्व यज्ञ

देव समाज में इन दिनों स्वास्तित्त्व के सम्बन्ध में पाठ और विचार के साधनों के दिन चल रहे हैं। जो 5 जुलाई से 30 अगस्त तक हैं। इन दिनों में गुरू महाराज की शिक्षा के अनुसार हमें अपने अस्तित्त्व (शरीर और आत्मा) के सम्बन्ध में पूजनीय देव शास्त्र 4 में जो आदेश दिए गए है, यथा सम्भव उनका पाठ करके अपना भला करना चाहिए।

सूचना

धर्म जीवन सम्बंधी हर प्रकार की जानकारी के लिए, चंदा आदि भेजने, कोई मैटर आदि भेजने के लिए साथ लिखे पते पर सम्पर्क करें या लिखें। : –श्रीमान बलदेव सिंह जी

House No. 3154, Sector 21-D,
Chandigarh - 160 022
Mobile : +91 81465-53154
+91 98769-59659

देव समाज के अकाउंट का पता इस प्रकार है।

DEV SAMAJ (G)
Central Bank of India, Sector 22, Chandigarh
Account No. : 3702002919 | IFSC Code : CBIN0280414

धर्म जीवन

खण्ड 34 अंक 8
अगस्त – 2023
वार्षिक मूल्य 50 रुपये

सम्पादिका
सुरजीत बराड़

सह सम्पादक
गौतम गोनियाना

आत्म ज्ञान ही सर्वश्रेष्ठ ज्ञान है।

विकासवाद के अनुसार इंसान का विकास करोड़ों वर्षों में पशुओं से हुआ है। पहले वह पशुओं की तरह ही जंगलों में रहता था, कपड़े नहीं पहनता था और भोजन के लिए इधर-उधर शिकार करने के लिए घूमता रहता था। धीरे धीरे जब से उसने खेती करनी शुरू की, तब से उसको एक जगह पर ही खाने को मिलने लगा और उसके भटकने की प्रवृत्ति कुछ कम हुई और उसका पेट भरने लगा, उसका दिमाग भोजन और उसकी खोज से हटकर कहीं और लगने लगा। उसके दिमाग में प्रश्न उठने लगे और वह अपने प्रश्नों के उत्तर ढूंढते ढूंढते विज्ञान की दुनिया में प्रवेश कर गया। आज इंसान समुंदर, आकाश, जमीन सब पर वैज्ञानिक खोजें कर रहा है। ज्ञान का समुंदर उसने इकट्ठा कर लिया है। विज्ञान की खोज हमारी पृथ्वी से बाहर निकलकर चांद और मंगल की ओर जा रही हैं। शायद सारे विश्व और ब्रह्माण्ड की खोज इंसान की खोज की आगे की मंजिलें हैं। अफसोस कि जहां इंसान ने बाहर की दुनिया का असीम ज्ञान प्राप्त कर लिया है और आगे भी करता जा रहा है, वहीं उसे अपने विषय में ज्ञान नहीं है। हम अपने आपको नहीं जानते।

इंसान का इस तरफ कोई ध्यान नहीं है कि मैं कौन हूं? मैं इस पृथ्वी पर क्या करने आया हूं अर्थात मेरा लक्ष्य क्या है? अगर ऐसे प्रश्न किसी विचारशील के दिमाग में चलते भी हैं, तो उसे उनके ठीक और विज्ञानमूलक उत्तर नहीं मिलते। देव समाज संस्थापक ने इन प्रश्नों के विज्ञान मूलक उत्तर दिए हैं। हम उनकी शिक्षा के अनुसार अपने पाठकों को सरल ढंग से समझाने का प्रयास करते हैं।

प्र. इंसान (मनुष्य) क्या है?

उ. इंसान का अस्तित्त्व दो चीजों से बना है।

1) शरीर जो बाहर से दिखाई देता है जिसको हमें शीशे के सामने सजाते हैं, उसे रोग भी लगते है और हम डॉक्टर के पास भी जाते हैं।

2) जीवनी शक्ति वा आत्मा (जिसे हम देख नहीं सकते परंतु यह जीवनी शक्ति हमारे शरीर के रोम रोम में वास करती है, जिसे हम साधारण भाषा में मनुष्य की जान कहते हैं। जबकि आत्मा वा जीवनी शक्ति को हम देख नहीं सकते परन्तु अन्य शक्तियों की तरह हम उसके गुणों वा लक्षणों के आधार पर पहचान सकते हैं।)

प्र. जीवनी शक्ति वा आत्मा के क्या लक्षण हैं जिन के आधार पर हम उसे जान

सकते हैं?

उ. प्रत्येक जिंदा वजूद चाहे वह पौधा हो, चाहे पशु हो, चाहे मनुष्य हो, चाहे micro-organism हो, उसके शरीर में जीवन शक्ति वा आत्मा होती हैं।

1) **जीवनी शक्ति अर्थात आत्मा ही शरीर का निर्माण करती है।** इसको हम इस तरह से समझ सकते हैं, गेहूं के दाने लो, उनमें से कुछ दानों को खौलते हुए पानी में डाल दो और कुछ दानों को नहीं। जो दाने खौलते हुए पानी में डाले गए थे, उनको भी और दूसरे साधारण दानों को भी, अच्छी नरम और नमदार जमीन में बो दो। जिन दानों की जीवनी शक्ति हमने खौलते हुए पानी में डालकर मार दी थी, वह पौधे का आकार नहीं बन सकेगा, जबकि दूसरे दाने पौधे बना देंगे। इसी तरह जो लोग मुर्गी के अंडों को गर्म पानी में पका कर खाते हैं, वह उन अंडों के अंदर की जीवनी शक्ति को मार देते हैं। जो उबले हुए अंडे फिर किसी जिन्दा मुर्गी के बच्चे पैदा नहीं कर सकते। इसी प्रकार मनुष्य में भी अगर किसी स्त्री के गर्भ में ही उसके भ्रूण की मृत्यु हो जावे अर्थात जीवनी शक्ति मर जाए, तो फिर उस भ्रूण का शरीर निर्माण नहीं होता। इन सब बातों से साफ है कि जीवनी शक्ति ही जिन्दा शरीर का निर्माण करती है, अगर जीवनी शक्ति मर जाए तो शरीर निर्माण नहीं होता, शरीर भी मर जाता है।

2) **जीवनी शक्ति ही जिन्दा वजूद का प्रतिपालन करती है।** जीवनी शक्ति ही हमारे शरीर को माता के गर्भ में भी और जन्म लेने के बाद भी हमारे शरीर की पालना करती है। माता के गर्भ में भी यही जीवनी शक्ति माता के खून से भोजन और ऑक्सीजन लेकर और हानिकारक पदार्थों और कार्बन डाइऑक्साइड से बाहर निकालकर शरीर को पालती है और इस पृथ्वी पर जन्म लेने पर हमारे शरीर के विभिन्न अंगों जैसे दिमाग, दिल, फेफड़े,गुर्दे, muscles, nervous system आदि को काम में लाकर शरीर की पालना करती है। अगर जीवनी शक्ति अर्थात आत्मा शरीर में न हो, तो यह सारे अंग शरीर में हो कर भी कुछ काम नहीं कर सकते।

3) **जीवनी शक्ति वा आत्मा ही एक व दूसरे समय तक उस वजूद को जिन्दा रखती है।**

4) जीवनी शक्ति के अंदर यह योग्यता है कि वह **एक से अधिक हो जाने की सामर्थ्य रखती है।** पशु और इंसान दोनों ही संतान उत्पन्न करते हैं। पौधों के बीजों से नए पौधे पैदा होते हैं। पौधों की जड़ों, टहनियों, व पत्तों से भी नए पौधे पैदा किये जा सकते हैं। कई पौधों, पशुओं, व एक cell के जीवों को संतान उत्पन्न करने के लिए नर और मादा की जरूरत नहीं होती, एक ही प्रकार के जीव अपनी संतान पैदा कर सकते है।

प्र. जीवनी शक्ति व आत्मा शरीर में कहां रहती है? कुछ लोग मानते हैं कि आत्मा दिमाग में रहती है, कुछ लोग मानते है कि दिल में रहती है, कुछ लोग मानते हैं कि आत्मा होती ही नहीं। देव धर्म में इसको लेकर क्या धारणा है?

उ. सबसे पहले जो यह मानते हैं, कि आत्मा

होती ही नहीं। उनका यह ख्याल झूठा है क्योंकि हमारा शरीर व अन्य पौधों, पशुओं आदि का शरीर जीवित है, उसे जिन्दा रखने वाली जान का नाम ही आत्मा है। कुछ लोग यह मानते हैं कि आत्मा व जीवनी शक्ति सिर्फ दिल में या दिमाग में रहती है, यह भी पूर्ण ठीक नहीं है क्योंकि अगर heart या brain ट्रांसप्लांट कर दिया जाए, तो आत्मा तो फिर बदल जानी चाहिए जबकि ऐसा नहीं होता। दरअसल **आत्मा व जीवनी शक्ति हमारे प्रत्येक जीवन सैल में वास करती है।** इसीलिए प्रत्येक जीवित सैल को clonning विधि के द्वारा इस्तेमाल करके बिल्कुल वैसा ही इंसान व पशु बनाया जा सकता है। पौधों की दुनिया में तो इसका इस्तेमाल बहुत होता है, जहां पौधों के सैल इस्तेमाल करके उनके जैसे वैसे ही नए पौधे बनाए जाते हैं जिसे tissue culture कहते हैं।

प्र. क्या पौधों, पशुओं, मनुष्यों की जीवनी शक्तियां एक जैसी होती हैं?

उ. नहीं। पौधों, पशुओं और मनुष्यों की जीवनी शक्तियां एक जैसी नहीं होती। पौधों की जीवनी शक्ति inorganic पदार्थों और सूर्य के प्रकाश से अपना भोजन बना सकती हैं, जबकि पशुओं और मनुष्यों की जीवनी शक्तियां ऐसा नहीं कर सकती। पशुओं की जीवनी शक्तियों में उन्नतिशील मानसिक शक्तियां नहीं होती, जबकि मनुष्यों की जीवनी शक्ति में उन्नतशील मानसिक शक्तियां वर्तमान हैं।

प्र. क्या मनुष्य की आत्मा के भी शरीर की तरह अंग हैं?

उ. आत्मा के भी शरीर की न्याई अंग होते हैं। जैसे हमारा शरीर बहुत सारे अंगों से बना हुआ एक organised system है, वैसे ही मनुष्य का आत्मा बहुत सारी शक्तियों से बना हुआ organised system है। मनुष्य की आत्मा के निम्नलिखित अंग हैं :-

1) शरीर के निर्माण, पालन, उस पर शासन करने और उस पर उसको जिंदा रखने वाली चार प्रकार की शक्तियां।
2) ज्ञान उत्पादक नाना प्रकार की शक्तियां।
3) सुख-दुख उत्पादक नाना प्रकार की भाव शक्तियां।
4) सुख के लिए आकर्षण और दुख के लिए घृणा की भाव शक्तियां।

प्र. मनुष्य की आत्मा के अंग कैसे काम करते हैं, या मनुष्य को कैसे चलाते हैं?

उ. उपरोक्त अंगों में से आत्मा का चौथा अंग अर्थात सुख के प्रति आकर्षण और दुख के प्रति घृणा यही मनुष्य को मुख्य रूप से चलाता है। इन्हीं के अधीन ही मानसिक शक्तियां भी चलती हैं। इंसान अपने माता पिता से कुछ जन्मजात पूंजी लेकर आता है जिसे inheritance कहते हैं। फिर जब वह इस धरती पर जन्म लेता है तो उसके चारों ओर से उस पर प्रभाव पड़ते हैं। Inheritance और अपने चारों ओर के प्रभावों के कारण कुछ बातें उसे सुखदायक अनुभव होती हैं और कुछ बातें दुख देती हैं। सुख के लिए वो आकर्षण अनुभव करता है और दुख के लिए घृणा अनुभव करता है। जैसे जिस किसी स्वादिष्ट चीज खाने में उसे सुख मिलता है, उसके लिए वह आकर्षण अनुभव करता है और जो

चीज खाने में सुख ना मिले वा दुख मिले, उससे वह दूरी अनुभव करता है। कुछ कपड़ों को पहनने में सुख मिलता है और कुछ में नहीं। धन कमाने व प्राप्त होने से सुख मिलता है और उसके चले जाने से दुख मिलता है। अपनी संतान को प्यार करने से सुख मिलता है। अपनी प्रशंसा सुनने में सुख मिलता हैं और अपने दोष सुनने में दुःख मिलता है। किसी पद के मिलने से सुख मिलता है और उसके चले जाने से दुख मिलता है। किसी को किसी की सेवा करके सुख मिलता है, तो किसी को किसी अन्य पशु और मनुष्य को सताकर सुख मिलता है। कुछ काम हम दुख से बचने के लिए करते हैं, जैसे पढ़ाई करने में दुःख मिलता है पर जानते हैं अगर नहीं पढ़ेंगे तो future में ओर ज्यादा दुःख मिलेगा। व्यायाम और सैर नहीं करेंगे तो शरीर बीमार हो जाएगा और दुख मिलेगा। कई बार हम सोचते हैं कि दिल कहता है करो और दिमाग कहता है ना करो, दरअसल वह हमारे इन्हीं सुखों की लड़ाई हो रही होती है। एक सुख कहता है करो और दूसरी तरफ दूसरा सुख कहता है कि मत करो। मनुष्य सुख के लिए प्यार अनुभव करता हैं और दुखों के लिए घृणा अनुभव करता हैं इन्हीं को हमारे भाव कहते हैं और यही हमें चलाते हैं, हमारी सोच, हमारे विचार, हमारी क्रिया हमारे यही सुख निर्धारित करते हैं।

मनुष्य के यह सुख अनुराग जिन आठ प्रकार को बड़ी बड़ी श्रेणियों में विभक्त हो सकते हैं, वह यह हैं :-

1) शरीर सम्बन्धी कई सुख अनुराग। (स्वाद, नशा, काम वा आलस्य सुख अनुराग)
2) "अहं" सम्बन्धी कई सुख अनुराग।
3) संतान सम्बन्धी सुख अनुराग।
4) धन सम्पत्ति सम्बन्धी सुख अनुराग।
5) संस्कार, संग वा अभ्यास सम्बन्धी सुख अनुराग।
6) हिंसा सम्बन्धी सुख अनुराग।
7) मिथ्या विश्वास सम्बन्धी कई सुख अनुराग।
8) उच्च वा सात्विक भाव सम्बन्धी कई सुख अनुराग।

इन विविध प्रकार के सुख अनुरागों में से प्रत्येक के विरूद्ध किसी घटना के उपस्थित होने पर मनुष्य के आत्मा में जो आघात लगता है, उस से उस में दुःख की उत्पत्ति होती है, और ऐसे नाना दुःखों की उत्पत्ति से उसमें नाना प्रकार की घृणाओं की उत्पत्ति होती है।

प्र. क्या जीवनी शक्ति वा आत्मा में भी परिवर्तन आता है?

उ. विश्व में परिवर्तन का अटल नियम काम करता है। विश्व में जितने भी पदार्थ व जितनी भी शक्तियां हैं, वह सब परिवर्तन के अटल नियम के अधीन हैं। आत्मा भी विश्व का अंश है। यह भी परिवर्तित होता है और परिवर्तित होकर पहले से बेहतर वा पहले से खराब बन जाता है।

प्र. जीवनी शक्ति वा आत्मा में परिवर्तन आने से उसका Result(फल) क्या है?

उ. मनुष्य के जिन कार्यों के करने से, जिन विचारों से, विश्व में कोई अस्तित्त्व पहले से बेहतर बनता है तो वह मनुष्य की आत्मा को भी बेहतर बनाता है और आत्मा पहले

से स्वस्थ व बलवान बनती है। इसके उल्ट मनुष्य के जिन कार्यों के करने से, जिन विचारों से, विश्व में कोई अस्तित्त्व पहले से खराब बनता है तो वह मनुष्य की आत्मा को खराब बनाता है और आत्मा पहले से रोगी और बलहीन बनता है।

मनुष्य के उपरोक्त सुख अनुराग आत्मा को रोगी बनाते हैं, उपरोक्त सुख अनुरागों के अधीन होकर मनुष्य स्वाददार चीजें खाते - खाते शरीर को रोगों का घर बना लेता है। नशों में जब मनुष्य को सुख मिलता है, तो उन्हें छोड़ नहीं सकता। डॉक्टरों के कहने पर भी नहीं छोड़ सकता, बीमारी और मौत को भी गले लगा लेता है। मान, बड़ाई, प्रशंसा, पद के लिए तरह - तरह की अपहरणकारी और अन्यायकारी गतियां करने के लिए अपने आप को बाध्य अनुभव करता है। पैसे के अनुराग के बढ़ जाने से उसे इकट्ठा करने में सुख पाता है, उन पैसों को अपने व अपने परिवार की उचित जरूरतों पर भी खर्च करने से बचना चाहता है, उन्हें किसी भले काम में दान नहीं कर सकता और पैसों के लिए लोगों को ठगता है, चोरी करता है और गलत तरीके भी अपनाता है। इससे आत्मा का दिनों दिन पतन होता है।

उपरोक्त सुख पाते पाते वह निम्नलिखित महा भयाानक फल पाता है :

1. वो अपनी बुरे कार्य वा बुराई को बुरा देखने के विचार से अंधा हो जाता है। अगर कोई उसे उसकी बुराई दिखावे भी तो भी उसे नज़र नहीं आती। उस पर किसी अच्छी संगत वा पुस्तक का कोई असर नहीं होता।
2. वो उल्टा दृष्टा बन जाता है, अर्थात वो अच्छे कामों को बुरा और बुरे कामों को अच्छा देखता है, और वैसे ही करता है।
3. शारीरिक दुख, कष्ट पाता है और असमय मौत का शिकार हो जाता है।
4. बुराई से निकलने के बल को खोता रहता है, और चाह कर भी बुराई से नहीं निकल सकता और अपनी निर्माणकारी शक्ति का नाश कर लेता है।

प्र. आत्मा के पतन से मुक्ति कैसे हो और आत्मा का विकास किस प्रकार हो?

उ. अधिकारी मनुष्य आत्माओं की जहां जहां तक आत्मिक पतन से मुक्ति हो सकती है, उसकी प्राप्ति की सत्य विधि यह है कि उनमें अपनी पतनकारी गतियों के संबंध में कुछ घृणा पैदा हो और किसी पतन विषयक आत्मिक विकार से मोक्ष पाने के लिए उच्च दुख की उत्पत्ति हो। आत्मिक पतन से यह मोक्ष दायक उच्च घृणा और उच्च दुख अधिकारी मनुष्य में तब ही पैदा हो सकता हैं जब उन्हें सच्चे मोक्ष दाता भगवान देवात्मा से उच्च घृणा और उच्च दुख उत्पादक देव ज्योति और देव तेज यथेष्ट मात्रा में प्राप्त हों।

मनुष्य आत्मा में उच्च व धर्म जीवन का प्रकाश दो प्रकार की उच्च व सात्विक शक्तियों की जागृति और उन्नति से होता है। वह दो प्रकार की उच्च व सात्विक शक्तियां यह है : -

1) परोपकार विषयक विशुद्ध सात्विक शक्तियां।
2) धर्म के पूर्ण आविर्भाव भगवान देवात्मा के साथ आत्मिक संबंध स्थापित करने वाले उच्च व सात्विक भाव।

जब तक इन दो प्रकार की उच्च व सात्विक शक्तियों की किसी मनुष्य आत्मा में जागृति ना

हो तब तक उसमें उस जीवन का आरंभ नहीं होता और नहीं हो सकता। मनुष्य के आत्मा में उच्च जीवन के विकास की सत्य विधि यह है कि किसी जन के आत्मा में उसके पूर्वजों के क्रम में कोई उच्च भाव बीज रूप में आया हो और उसकी जागृति और उन्नति के लिए जहां तक और जिस जिस प्रकार की नेचर विषयक अनुकूल दशा की आवश्यकता है वह अनुकूल दशा उसे प्राप्त हो। यदि इनमें से कोई भी बात ना हो तो उस आत्मा में उच्च भाव की कुछ भी जागृति और उन्नति नहीं होती और नहीं हो सकती।

मनुष्य जगत का कोई अधिकारी जन अपने आत्मा में जिन जिन उच्च व सात्विक भावों को विकसित कर सकने पर उनके द्वारा देवात्मा के साथ आत्मिक संबंध स्थापन कर सकता है उनमें से चार सात्विक भाव यह है –

1) उनके सत्य देवरूप के संबंध में सत्य और अटल विश्वास भाव।
2) उनके सत्य देवरूप से संबंध में सत्य और अटल श्रद्धा भाव।
3) उनके सत्य देवरूप से अति दुर्लभ आत्म कल्याण पाकर उनके प्रति अटल कृतज्ञता भाव।
4) उनके देव प्रभावों के लिए आकर्षण भाव।

– गौतम गोनियाना

देव वाणी

नेचर सदा अपने नियमों में सच्ची है। कोई भी आदमी जहां चाहे, उसका तजरबा कर ले। नेचर का जो अटल नियम है, वह उससे कभी नहीं टलती। इसलिए तुम नेचर के अंग होकर उसके लिए हितकर बनो। नेचर सब को एक ही निगाह से देखती है, सबके लिए एक ही कायदा रखती हैं उस का मौत और ज़िंदगी, विनाश और विकास, बेहतरी और अबतरी का सबके लिए एक ही नियम है। यदि तुम भले नियम पर अमल कर सको और नीचता के बस में हो कर उसे लात न मारो, तो तुम्हारा भला होगा, वरना अवश्य बुरा होगा; इसमें किसी की कुछ भी रूरियायात नहीं होती और नहीं हो सकती। तुम्हारे कार्य का फल तुम्हारे लिए अवश्यम्भावी है, चाहे कोई कर्मचारी और चाहे कोई सेवक और चाहे किसी का भी बेटा या किसी का भी सम्बन्धी हो।

पृष्ठ 20 का बाकि

क्या है? मिथ्या शिक्षाओं और सत्य धर्म की शिक्षा में क्या अन्तर है? देवात्मा की दुनिया में मनुष्य के भले अथवा शुभ का पैमाना क्या है? नीच घृणा (गुस्सा) क्या होती है, क्यों उपजती है और उसका हल क्या है? आदि आदि विषयों पर प्रकाश डाला।

यहाँ पदमपुर में भी 26.6.2023 तक रुककर 6 सभाएँ करवाई गयीं। धर्म सम्बन्धियों द्वारा 2000 रूपये का दान प्राप्त हुआ।

अपने अस्तित्त्व का ज्ञान

जैसे आप पहले लेख में पढ़ेंगे, कि हमारा अस्तित्त्व शरीर और आत्मा के संयोग से बनता है। स्वास्तित्व यज्ञ के दिनों में इन दोनों विषयों पर विचार करने की आवश्यकता है।

हम सुख अनुरागी मनुष्यात्मा स्थूल दिखने वाले शरीर के सम्बंध में भी महा अबोधी हैं। शरीर विषयक नीच अनुरागों के अधीन होकर हम अपने शरीर को रोगों का घर बना लेते हैं।

पहला शारीरिक महारोग

<u>स्वाद अनुराग: -</u>

स्वाद अनुराग जो लगभग सब मनुष्यों पर कम या ज़्यादा हावी है, उसके अधीन होकर : -

हम ऐसी चीजें खाते हैं, जो हमारे शरीर को हानि पहुँचाती हैं। शूगर के मरीज होकर मीठा खाना नहीं छोड़ सकते, तली चीज़े खाते हैं, हाजमा खराब रहता है, तो भी खाते जाते हैं। वजन बढ़ जाता है, मोटापा बिमारियों का घर है फिर भी स्वाददार चीज़ खाने से नहीं हटते। मनुष्य की खाने की लालसा आजकल तो इतनी बढ़ चुकी है कि और कोई बिजनेस भले फेल हो जाए, परन्तु खाने के स्थान हमेशा आपको भरे मिलेंगे। ज़रूरत से ज्यादा खाते हैं, बीमार होकर भी ऊट-पटांग खाने से नहीं टलते। उसका नतीजा यह है कि मरीजों से हस्पताल भरे पड़े हैं। अमरीका जैसे विकसित देश में हर 35 मिन्ट में एक हार्ट अटैक से मृत्यु होती है। बिमारियों से बचने के लिए अपने शरीर को सुरक्षित रखने के लिए आवश्यक है : -

1. हानिकारक चीज़ें खाने से बचना।
2. स्वास्थ्य वर्द्धक भोजन, अर्थात सब्जियों, फलों, मोटे अनाज का इस्तेमाल करना।
3. नमक का प्रयोग कम करना, चीनी तो एक नम्बर की दुश्मन है। चीनी के स्थान में शक्कर का प्रयोग थोड़ी मात्रा में करना।
4. यदि मिठाई आदि खानी भी है, तो हफ्ते दस दिन में एक टुकड़े से ज्यादा न खाना। मीठा मुंह करने के लिए एक डली गुड़ का प्रयोग कर सकते हैं।
5. मांसाहार न करना, इससे न केवल जानवरों की जान जाती है, बल्कि जैसे वह तड़प तड़प कर मरते हैं, उनका वह दु:ख और चीखों का प्रभाव भी उसमें सम्मलित होता है, इसलिए मांसाहार करते-करते मनुष्य में गुस्सा बढ़ता है। मांसाहार मनुष्य की प्रकृति के बिल्कुल अनुकूल नहीं है। यह वहम है कि इससे ताकत आती है, बिल्कुल भ्रम है। हाथी जैसा ताकतवर जानवर शाकाहारी है। और हमारे बहुत से उच्च कोटि के खिलाड़ी भी शाकाहारी हैं। मांसाहारी भोजन हृदय रोग उत्पन्न करता है।

   शुद्ध भोजन, शुद्ध हवा, रोशनी, शुद्ध पानी मनुष्य को सेहतमन्द रख सकते है।
6. ज्यादा मसाले, मिर्च, अचार भी अधिक मात्रा में प्रयोग करने से पेट के बहुत से रोग होते हैं। इनसे जितना परहेज़ हो सब अच्छा है।

परम पूजनीय भगवान देवात्मा इस विषय में फरमाते है : -

"<u>सुख परायण बनकर</u> और इन सब विषयों में <u>नेचर के शुभ</u> नियमों को तोड़कर मनुष्य जिस जिस प्रकार के रोगों और कई <u>असाध्य वा संघातिक रोगों से ग्रस्त</u>

होते हैं, और उनके द्वारा नाना प्रकार के दारूण दुख वा कष्ट सहते है, और कभी कभी ऐसे कष्ट सहने की शक्ति न रखने पर अपने ही हाथ से अपने शरीर की आप हत्या कर लेते हैं। वह सब रोग, वह सब महा दुख वह सब दारूण कष्ट पशु जगत में पाए नहीं जाते, और न उनमें वह आत्मघात की घटनाएं होती है जो मनुष्य जगत में पाई जाती हैं।"

दूसरा शारीरिक महा रोग

नशा सुख अनुराग :-

नशा मनुष्य की सेहत के लिए महा घातक है। परन्तु ज्यों ज्यों मनुष्य की बुद्धि विकसित हुई, मनुष्य ने अपने सुख के लिए तरह -तरह के नशे पैदा कर लिए। नशा करने से कुछ समय के लिए मनुष्य की स्नायु प्रणाली उतेजित हो जाती है, उससे जो क्षणिक सुख महसूस होता है, उसका मनुष्य आदी हो जाता है और यह आकर्षण बढ़ते बढ़ते उसे उस नशे का गुलाम बना देता है। यह जानकर भी कि नशे से किस प्रकार हृदय, फेफड़ों वा मानसिक शक्तियों को हानि पहुँच रही है, डाक्टरों की चेतावनी पर कि यदि यह नशा किया तो आपकी जान चली जाएगी, नशा नहीं छूटता, तम्बाकू द्वारा मुंह के कैंसर से जो भयानक हालत होती हैं उसे देखकर भी मनुष्य बेबस हो जाता है। नशा नहीं छूटता, मौत को गले लगाना मन्जूर कर लेता है। जिस शरीर को मनुष्य सजाता, संवारता है, बेहद प्यार करता है, उसे ही मौत के मुंह में धकेलने के लिए मज़बूर हो जाता है।

तीसरा शारीरिक महा रोग

काम अनुराग वा सैक्स का अनुचित आकर्षण

इस महा रोग से जो भयानक दृश्य देखने, सुनने वा पढ़ने को मिलते हैं, वह रोंगटे खड़े कर देते हैं। मनुष्य रूपी हैवान से छोटी छोटी बच्चियां, सगी बेटियां, सगी सम्बन्धी स्त्रियां वा बच्चियां सुरक्षित नहीं। इस रोग ने तो मनुष्य को दरिंदा बना दिया है। नशा भी इस रोग को बढ़ाने का बहुत बड़ा साधन है। गन्दा साहित्य, गन्दे गीत, गन्दी बातचीज, हंसी मख़ौल करके मनुष्य इस अनुराग की तृप्ति करता है। काम अनुराग ने जो विश्व भर में तबाही मचाई है, वह किसी से छुपी नहीं। दिन पर दिन नशा वा काम अनुराग के बढ़ाने के नये नये साधन ईज़ाद हो रहे हैं। ऐसा लगता है कि इन दोनों अनुरागों से ही विश्व जल रहा है।

चौथा महा रोग

आलस्य अनुराग :-

आलसी होकर मनुष्य न समय पर उठता है, फिर सैर, व्यायाम तो क्या करना था। विशेष रूप से नशा करने से उत्तेजना होती है, वह जब समाप्त होती है, तो मनुष्य निकम्मा हो जाता है। आलस्य अनुरागी स्वयं सुखार्थी होकर दूसरों से काम लेना चाहता है। स्वयं किसी के लिए कुछ नहीं करना चाहता। कई बार कोई कमाई न करके अपना आत्म सम्मान भी खो देता है। अपने कर्तव्य कर्मों के प्रति भी लापरवाह हो जाता है। कई बार अपने पूर्वजों से मिली सम्पत्ति पर निर्भर करके आप कुछ न करके उसे भी गंवा बैठता है। कहते हैं कि खाली दिमाग शैतान का चर्ख़ा होता है। साधारणत: मनुष्य किसी के अधीन होकर कम से कम काम करके पैसे ऐंठना चाहता है। यदि कोई देखने वाला न हो तो एक-एक मज़दूर आधा काम भी नहीं करता। यदि घर सम्पन्न हो और सहायक रखे हों तो पानी का गिलास भी स्वयं लेना नहीं चाहता। इस प्रकार निकम्मापन बढ़ता जाता है। और लोग इसमें अपनी भरपूर शान समझते हैं।

यह चारों रोग कहने को तो शरीर सम्बन्धी हैं, परन्तु वास्तव में यह भयानक आत्मिक रोग हैं। शरीर तो केवल मात्र आत्मा के हाथों औज़ार है। यह सब आत्मिक शक्तियां हैं, जो मनुष्य के शरीर के द्वारा परिचालित होती है।

दुनिया में कोई ऐसा धर्म नहीं है या धर्म गुरू नहीं जिसने मनुष्य को उसकी आत्मिक शक्तियों का ज्ञान दिया हो। जैसे डाक्टर ही शरीर सम्बन्धी रोगों को बता सकते हैं और उनका ईलाज कर सकते हैं, उसी प्रकार परम पूजनीय भगवान आध्यात्मिक वैज्ञानिक डाक्टर हैं, जो मनुष्य की नीच वा उच्च शक्तियों का ज्ञान देते हैं, नीच शक्तियों से बचने और उच्च शक्तियाँ अधिकारी जनों में पैदा करने की सामर्थ्य रखते हैं। उनके भीतर की देव शक्तियों से उस अद्‌भुत ज्योति का प्रकाश हुआ है, जो मनुष्य के आत्मिक रोगों को दिखाती है और ऐसे अदभुत तेज का प्रकाश हुआ है, जो आत्मिक रोगों से बचने का बल देता है। इस ज्योति और बल को पाकर हज़ारों जन आत्मिक रोगों को जानने और अपनी-अपनी योग्यता के अनुसार निकलने में समर्थ हुए हैं।

हमारे धन्य भाग हैं कि हम बहुत तुच्छ बुद्धि रखने वाले अज्ञानी जनों को उनकी ज्योति को कुछ पाने और समझने का सौभाग्य मिला है। जिस ज्ञान से बड़े-बड़े विद्वान अनभिज्ञ हैं। धन्य हैं सत्गुरू! धन्य भाग हैं हमारे!! और आत्मिक रोगों के विषय में सम्भव हुआ तो अगले अंक में गुरू कृपा से देने का यत्न करेंगे। अपने अस्तित्त्व के ज्ञान के बिना हम अपने आप को कुछ भी समझें, परन्तु हम रहेंगे पूर्ण अन्धकार में।

परम पूजनीय भगवान देवात्मा फरमाते हैं :-

1) मनुष्य होकर जो जन अपने अस्तित्त्व के विषय में सत्य ज्ञान लाभ करने की कोई अकांक्षा नहीं रखता, उससे बढ़कर कृपा-पात्र कौन हो सकता है?

2) मनुष्य होकर किसी जन के लिए अपने अस्तित्त्व-विशेषकर अपने आत्मा के विषय में सत्य ज्ञान लाभ करने का अकांक्षी होने से बढ़कर कोई और बड़ा अधिकार नहीं, क्योंकि उससे नीचे पशु जगत के किसी जीव को अपने अस्तित्त्व के विषय में इस प्रकार के ज्ञान लाभ करने का कोई अधिकार प्राप्त नहीं ।

3) मनुष्य होकर किसी जन के लिए अपने आत्मा के सम्बन्ध में सत्य ज्ञान लाभ करने की अकांक्षा रखकर भी परन्तु अपनी अयोग्यता के कारण उसके विषय में किसी सत्य के दर्शन वा उपलब्ध करने के योग्य न होना, अथवा ऐसी आकांक्षा से ही वहीन होकर अपने अस्तित्त्व के विषय में पूर्ण अन्धकार और अज्ञान की दशा में रहना उसकी अत्यन्त कृपा-पात्र दशा है।

4) मनुष्य होकर किसी जन का अपने आत्मा के सम्बन्ध में सत्य बोध वा सत्य ज्ञान लाभ करने के योग्य होना और उसकी प्राप्ति का शुभ अवसर पाना उसका महा श्रेष्ठ अधिकार है।

काश! हम अपने भीतर की भयानक शक्तियों अर्थात शरीर सम्बन्धी ज्ञान के साथ -साथ अपने अन्य रोगों स्वार्थ, नीच घृणा, घमंड, अहंकार, मान, बड़ाई, ईर्षा, द्वेष आदि शक्तियों का ज्ञान पा सकें।

-सुरजीत बराड़

तुम किस अवस्था में हो?

इस समय चारों ओर साधारण मनुष्यों की यह अवस्था है कि वह खाने, पीने, सोने और अपने जोड़े के साथ रहने की निहायत प्रबल रुचियां रखते हैं। इसके अतिरिक्त बहुत से लोग अपनी संतान को प्यार करने, सुन्दर कपड़े पहनने, सुस्वादु ने वस्तुए खाने, खुशबू सूंघने, सुरीली आवाजें सुनने, अपने लिए धन एकत्र करने, साथी मनुष्यों में नाम और इज्जत प्राप्त करनें और उन पर शासन करने आदि की प्रबल वासनाएं भी रखते हैं। बहुत सी दशाओं में ईर्ष्या, द्वेष, प्रतिशोध, अवगुण चिन्तन और निन्दा आदि भाव भी उनमें बहुत प्रबल रूप से वर्तमान पाए जाते हैं। कहीं कहीं किसी किसी मनुष्य के भीतर दया या रहम और परोपकार का भाव भी देखा जाता है। परन्तु उपरोक्त नाना प्रकार की बहुत सी शक्तियों को रखकर बहुत अधिक संख्या में मनुष्य जिनमें कि बड़े बड़े उच्च कोटि के विद्वान् और बड़े से बड़े पद रखने वाले और एक या दूसरे प्रकार का धर्म या मत रखने का दम भरने वाले लोग भी शामिल हैं, न केवल यह कि वह अपने जीवन के सच्चे हित और हानि की ओर कोई ध्यान नहीं देते बल्कि अपनी नाना प्रकार की शारीरिक और आन्तरिक वासनाओं की तृप्ति के लिए ऐसी ऐसी अत्यन्त अपवित्र और पाप-मूलक गतियां करते हैं कि जिनसे जहां उनके अपने शरीर और आत्मा तबाह और नष्ट हो रहे हैं, वहां उनके सम्पर्क में आने वाले बहुत से मनुष्य, पशु और अन्य जीवित और अजीवित अस्तित्त्व भी उनके हाथों से नष्ट होते और उनकी जान को रोते देखे जाते हैं। शराबखोरी, नशाखोरी, व्यभिचार, रिश्वतखोरी, धोखेबाज़ी, फ़रेब, चोरी, ठगी, और नाना पहलुओं में अत्यन्त भयानक असयंम आदि आदि क्रियाओं से विशेषकर पढ़े लिखे और अपेक्षाकृत अधिक समझदार मनुष्यों के शरीर दिनों दिन बरबाद हो रहे हैं। उनकी आन्तरिक कीमती से कीमती शक्तियों को महा भयानक हानि पहुँच रही है। शारीरिक और मान्सिक शक्तियां क्षय हो रही हैं। कितने ही नवयुवक थोड़ा सा सोचने और पढ़ने लिखने का काम करके थक जाते हैं। कितने ही अब जो देखने में दुनियां में भले मानस भी समझे जाते हैं, जरा थोड़ा सा उनका आन्तरिक हाल मालूम करने से यह पता लगेगा कि वह अपनी आयु का बहुत सा भाग उपरोक्त अत्यन्त अपवित्र और पापमूलक अभ्यासों में से एक या एक से अधिक के अभ्यासी रह चुके हैं। उच्च मानव शक्तियों के विचार से हमारे पढ़े लिखे नवयुवकों की अवस्था बहुत कृपापात्र बन गई है। प्रथम तो किसी आत्मिक सत्य और शुभ के देखने और उसे ग्रहण करने की शक्ति बहुत से लोगों के अन्दर पाई नहीं जाती। यदि कहीं किसी के भीतर थोड़ी सी जान वर्तमान है कि जिससे वह एक एक सच्चाई और अपने लिए हितकर भलाई को देखकर उसे ग्रहण करने और एक एक बुरे अभ्यास और गलत विचार को देखकर उसे छोड़ने की आकांक्षा भी करता है तो वह अन्दर से इस क़दर खाया जा चुका है, और इतना कमजोर और लोक मत का दास बन चुका है कि किसी बुराई और गलत विश्वास को छोड़ने और सच्चाई और भलाई को ग्रहण करने के लिए पग उठाने का साहस ही नहीं कर सकता। यह सब कुछ होने पर मज़ा यह है कि जिनकी ऐसी अवस्था हो रही है और जिनका दिनों दिन और भी अधिक से अधिक बुरा हाल होता जाता है, उन्हें साधारणत: अपनी ऐसी कृपापात्र अवस्था का कोई पता नहीं। वह अपने एक एक शारीरिक रोग का फिकर करते और उसके इलाज के लिए जगह जगह प्रयत्न करते तो देखे जाते है परन्तु वह जो

भीतर से उनका अस्तित्व ही नष्ट हो रहा है और उनकी सारी पूंजी ही खोई जा रही है, उसका उन्हें बिल्कुल ध्यान ही नहीं आता और इसके लिए उनके भीतर कोई फिकर और संग्राम नहीं देखा जाता। ऐसी बेसुधि की अवस्था रखकर अपनी इस अत्यन्त कष्टदायक और विनाशकारी अवस्था से उनके बचने की कहां तक आशा हो सकती है। नाना प्रकार की आन्तरिक रुचियां और भाव और बाह्यक नाना सम्बन्धी और सामान जिन्होंने अब तक अपना कार्य करके उन्हें वर्तमान अवस्था में पहुँचा दिया है, वह वर्तमान रफ़्तार के बढ़ाने और उन्हें अधिक से अधिक पतित अवस्था में पहुँचाने का काम दे रहे हैं। इन सब में से कोई भी ऐसा नहीं जो इन बेचारों की वर्तमान कृपापात्र अवस्था को देखने और उस पर तरस खाकर उन्हें इस अवस्था से निकालने की आकांक्षा रखता या संग्राम कर सकता हो। तब ज़रूरत है और सख्त ज़रूरत है कि उन्हें मनुष्य जीवन के कोई ऐसे चिकित्सक मिलें कि जो न केवल उपरोक्त अवस्था में पहुँचे हुए हज़ारों और लाखों अत्यन्त रोगी और भीतर के घातक रोगों में फंसे हुए मनुष्यों की प्रकृत अवस्था को देखते हों, बल्कि इस बेसुधि की अवस्था से उन्हें निकाल कर सावधान करने और उनके रोगों को दूर करके उनके भीतर उच्च जीवन पैदा करने का संग्राम भी करते हों। मानवता की वर्तमान कृपापात्र अवस्था से निकालने और उसमें सबसे उत्तम भलाई लाने के लिए श्री देव गुरु भगवान ने महा संग्राम करके और असह्य दुख उठा कर अपना द्वार खोला है कि जहाँ पर उनकी शक्ति से बहुत से लोगों के जीवनों में विस्मयजनक उच्च परिवर्तन पैदा हुए हैं। जिन लागों के भीतर अपने जीवन के ईलाज और बेहतरी के लिए कुछ भी सच्ची आकांक्षा वर्तमान हो, उनके लिए इस जगत् में यह सब से बढ़ कर शुभ सन्देश है कि वह ऐसे दरबार में पहुँच कर सबसे श्रेष्ठ लाभ उठाने का यत्न करें।

सादर निमंत्रण

जैसा कि धर्म सम्बन्धियों को विदित है कि मल्लेकां (सिरसा) में देव समाज मन्दिर निर्माण का कार्य चल रहा है जिसमें किचन (रसोई), लंगर हाल वा ऊपर की साईड में छह कमरों, वाशरूम आदि के बनने में व उसमें बिजली, पानी व अन्य जरूरी सुविधाओं में वहां के स्थानीय धर्म सम्बन्धियों ने तन-मन-धन से सहयोग करके व दूर दराज़ के धर्म सम्बन्धी धन के द्वारा सहयोग करके अपना हित साधन कर रहे हैं। इस निर्माण में चिनाई व पलस्तर का कार्य हो चुका है। बिजली फिटिंग का कार्य लगभग पूर्ण हो चुका है, मुख्य दरवाज़े लग चुके हैं। टायलेट, बाथरूम का कार्य कुछ दिनों में पूरा हो जाने की उम्मीद है। जो बकाया कार्य हैं, वो इस प्रकार हैं- बिल्डिंग का फर्श (टाईलें), कमरों के दरवाज़ें, टूटीयाँ, वाशवेसन, आदि। बाकि मन्दिर बाउन्ड्री की चार दीवारी में लोहे के ऐंगल वा तारबन्दी व कलर करके उसे सुन्दर रूप दिया गया है। मन्दिर प्रांगण में सागवान के वृक्ष, गुलाब के व अन्य फूलदार पौधों व कई वृक्षों द्वारा मन्दिर को अन्दर व बाहर में सुशोभित किया गया है। सभी धर्म सम्बन्धियों को मन्दिर के दर्शन करने व यथासाध्य सहयोग करके अपना-अपना हित साधन करने का निमन्त्रण व अधिकार प्राप्त है।

माननीय श्रीमान बलदेव सिंह जी की प्रार्थना पर 10-11 धर्म सम्बन्धियों ने एक 2 पंखा लगाने का वायदा किया है।

सद्गुरु की कृपा से एक गला सड़ा, वजूद बर्बाद होने से बच गया।

भगवान देवात्मा की शरण में आने से पहले मैं बहुत से मिथ्या विश्वास रखता था। वेदों को ईश्वर कृत मानता था। जनेऊ और चोटी रखता था। दोनों वक्त संध्या करता था। हवन करता था। हवन के मंत्र मुझे जुबानी याद थे। मेरी किरयाने की दुकान, साईकिल की दुकान, फर्नीचर की दुकान साथ साथ थी। प्रात: दुकान खोलने से पहले बरामदे में प्रतिदिन हवन करता था। घर में चारों वेद रखे थे।

आर्य समाज की जमीन पर बिल्डिंग बनाने के लिए रुपया नहीं था। मैंने इश्तेहार चिपकाए कि अमुक तारीख को एक हवन आर्य समाज में होगा, जिसमें मंत्रों के द्वारा आग पैदा की जाएगी। मैंने आंगन में एक हवन कुंड बनाया और उसमें एक शीशी लाल दवाई की बिखेर दी, ऊपर कुछ लकड़िया चिन दीं। लोग दूर दूर से पहुंच रहे थे। अमृतसर से बाबा गुरुमुख सिंह जी के आदमी भी पहुँच गए थे। हवन कुंड के चारों तरफ आसनों पर उन लोगों का बिठाया गया, जो धनाढय थे। उनके सामने घी से मिली सामग्री रख दी और अपने सामने मैंने ग्लिसरीन से भरा बर्तन रख लिया। उसके बाद हवन मंत्र उच्चारण होने लगे हवन कुंड में घी और सामग्री पड़ने लगी। जब ग्लिसरीन लाल दवाई पर पड़ती थी तो आग की ज्वाला पैदा हो जाती थी। चारों ओर जय जयकार होने लगी। वेदों की जय, आर्य समाज की जय, स्वामी दयानंद की जय के नारे लगने लगे। रुपए और नोटों की बौछार होने लगी और 15000 रूपये इकट्ठा हो गया। (पुराने जमाने की बात है) इससे आर्य समाज की बहुत शानदार बिल्डिंग बनी और इस बिल्डिंग में लड़कों का हाई स्कूल खोला गया। इस हवन में चार कनस्तर घी के जलाए गए थे, जिस में से तीन चार सेर घी बच गया था। वह मैं चुरा के घर ले गया। चूरी बनाकर खाता रहा। मैं सिगरेट बहुत पीता था। सिगरेट का पूरा डिब्बा जिसमें पचास सिगरेट होती थी, दुकान की गद्दी पर बैठे बैठे पी जाया करता था। मैं अंग्रेजी शराब पिया करता था।

किसी के उपकार मेरे सामने कभी नहीं आते थे। ज़रा सी बात पर नाराज़ होकर मैं गुस्से से भर जाता था और दूसरों का अपमान करता था। माता जी बीमार हो गई। डॉक्टरों ने केवल दूध और साबूदाना खाने की इज़ाज़त दी थी। एक दिन उन्होंने कुछ नमकीन खिचड़ी मांगी। मैंने दूध भरा गिलास सामने की दीवार पर दे मारा और गुस्से से कहा "नहीं पीन्दी ता मर ना पी" तीन-चार दिन के लिए मैं बाहर चला गया। जब वापस आया तो पता चला कि माता जी का देहांत हो गया है।

एक बार मेरी नानी जी मेरे घर मिलने आई। वह चार दिन हमारे पास ठहरी। उनके साथ बातचीत में मुझे गुस्सा आ गया और उनके मुंह पर थप्पड़ दे मारा। मेरे हाथ में एक तोला सोने की अंगूठी पहनी हुई थी जिससे उनका मुंह सूज गया।

कुछ लेने देने के बारे में सगे ताया जी के साथ झगड़ा हो गया। मैंने उनको बाजार में घसीटा और मारा-पीटा और बेइज्ज़त किया। उनके लड़के को जिसका कोई कसूर नहीं था छ: महीने की जेल की सजा करवा दी। उन्होंने लाहौर हाई कोर्ट में अपील की। मैंने निगरानी करके उनकी सजा बहाल करवा दी।

इस तरह मेरी ज़िंदगी की रफ्तार चल रही थी। एक बार अपनी सगी मौसी के बॉक्स से मैंने सौ का नोट निकाल लिया और वह नोट मैंने गीता में रखकर ऊपर से गोंद से कागज चिपका दिया। वह बेचारी रो धो कर चुप हो गई। मैंने उनसे कहा ग़नीमत समझो तुम्हारे सारे नोट चोरी नहीं हुए। हो सकता है तुम्हारी अपनी भूल से नोट कहीं गिर गया हो।

एक दिन एक आदमी देव समाज की पुस्तकें बेच रहा था। मैंने वह पुस्तकें पढ़ी और मेरा संपर्क देव समाज से हुआ। मैं देव समाज की किताबें पढ़ने लगा और देव समाज का मेंबर बन गया। भगवान देवात्मा के देव प्रभावों को पाकर मुझे अपनी नानी जी के प्रति अपने खराब सलूक की याद आई। मैं उनके चरणों में हाजिर हुआ उनके चरणों को छुआ और उनके संबंध में अपने खराब सलूक को सामने लाकर अपने मुँह पर थप्पड़ और मुक्के मारे। वह समझी कि मैं पागल हो गया हूँ। मैंने कहा नानी जी पागल तो मैं उस वक्त था जब मैंने आपके मुंह पर थप्पड़ मारा था। अब तो मैं आपके पास क्षमा मांगने आया हूँ। नानी जी ने मुझे अपना आशीर्वाद दिया और खुशी का प्रकाश किया।

मुझे अपने ताया जी के संबंध में अपने खराब सलूक याद आये। मैंने उनकी तलाश शुरू की। मैं लखनऊ गया लखनऊ से किसी अन्य स्थान पर गया और वहां से बड़ौदा पहुंचा। सारा दिन घूमता फिरता रहा। आखिर उनकी दुकान का पता लगा। दुकान पर मेरे ताया जी के दो लड़के बैठे हुए थे। उनमें से एक वो था जिसको मैंने छः महीने जेल करवाई थी। उसने सोचा यह दुष्ट कहां से आ गया। मैं इस भाई के गले में बाहें डालकर फूट-फूट कर रोने लगा और अपनी गलती के लिए क्षमा मांगी। मेरे दोनों भाई भी रोने लगे। कितने ही आदमी यहां इकट्ठे हो गए। भाइयों ने बताया कि ताया जी का देहांत हो चुका है और कहा कि तुम अपनी गलती समझ कर आए हो, हमने तुम्हें माफ कर दिया। मैं वहां तीन दिन रहा और हमारा परस्पर का संबंध स्वर्गीय बन गया। अब जब भी वंश के संबंध में पाठ विचार के दिन (देव समाज का एक त्योहार जिसमें अपने वंश के लोगों के गुण देखे जाते हैं, उनके साथ संबंध गाढ़ किया जाता है) होते हैं, तो मैं उन्हें पत्र लिखता हूँ और कई साल से अपनी गलती का प्रकाश करके दुखी दिल के साथ उसे बार-बार क्षमा प्रार्थना करता रहा हूँ। देव समाज में आकर मेरे जीवन में जो परिवर्तन आया है उसका सारा श्रेय श्री देव गुरु भगवान और उनकी समाज को है। मेरे दिल से बार बार यह आवाज़ निकलती है, सतगुरु तुम धन्य हो। धर्म सम्बन्धियो! तुम धन्य हो। आपकी कृपा से एक गला सड़ा नीच अनुरागों का खाया हुआ वजूद और अधिक बर्बाद होने से बच गया।

-एक सेवक

सत्य धर्म बोध उत्सव

आपको यह जानकर खुशी होगी कि सत्य धर्म बोध उत्सव 30 सितम्बर से 2 अक्टूबर 2023 तक देव समाज मन्दिर मल्लेकां (जिला सिरसा) में मनाया जा रहा है। धर्म सम्बन्धियों की सेवा में प्रार्थना है कि आप स्वयं भी पहुँचे और अन्य जनों को भी इसमें शामिल होने के लिए ज्यादा से ज्यादा प्रेरित करें।

एक वा दूसरे नीच राग की गुलामी से छुटकारा पाने का अति मूल्यवान साधन

इंसान की जो जो सुख लालसाएं उसके लिए किसी किस्म का सुख या मजा या लुत्फ या आराम लगातार पहुंचाती हैं, उनकी जहां तक मुमकिन हो वह तृप्ति करना चाहता है और उन सुखों या मज़ों की चाट में पड़ कर वह धीरे धीरे उनका गुलाम बन जता है। और उनकी तृप्ति चाहने या करने से अगर उसे अपने आपको या उसके द्वारा किसी और को किसी किस्म का कोई नुकसान पहुंचता हो, तो भी वह इस गुलामी के कारण इनकी तृप्ति करने से अपने आपको रोक नहीं सकता। हां जिन सूरतों मे वह यह भी जानता है कि उसकी फलां फलां इच्छा या वासना अपनी तृप्ति हासिल करने में से या किसी और को फलां फलां किस्म का नुकसान पहुंचाती हैं, तो भी वह अपने आप को उसकी सेरी के लिए मजबूर पाता है, और इस किस्म की चाल या क्रिया से अपने आपको किसी तरह से भी रोक नहीं सकता। कितनी सूरतों में किसी जज्बे या वासना के भड़काने वाले सामानों के सामने आने की देर है, कि बस फिर पागल और बेबस होकर अपने आपे से बाहर हो जाता है, और किसी तरह से भी रुक नहीं सकता। इस किस्म की गुलामी में हर एक देश और हर कौम के लाखों और करोड़ों लोग ग्रस्त पाए जाते हैं। इस किस्म की गुलामी में ऐसे लोग भी ग्रस्त पाए जाते हैं कि जो किसी देश के बादशाह, किसी सूबे के हुकमरान या किसी राज के राजे महाराजे कहलाते हैं, या दौलतमंद या अमीर या आलम व फाजल या वकील बेरिस्टर या इंजीनियर या डाक्टर या हकीम या दुकानदार या कारखानेदार या मूर्ख या अनपढ़ वगैरह होते हैं। गरजे कि जो लोग चाहे वह मर्द हों या औरत, जहां जहां तक वह एक या दूसरे नीच राग के गुलाम हैं, वे इसकी तृप्ति करने के लिए अपने आप को बेबस पाते हैं। और न तो उनकी शिक्षा, उनकी हकूमत, उनकी डाक्टरी, उनकी कानूनी काबलियत, उनका मैजिस्ट्रेट होना, उनकी कोई धार्मिक शिक्षा कसरत से सूरतों में अदालती सजा या सरकारी डंडा भी उन्हें इस हालत से नहीं बचा सकता है और न ही कहलाने वाले ईश्वर या खुदा का डर और जेलखाने की तकलीफ और बिरादरी की बदनामी वगैरह वगैरह में से कोई बात उन्हें इस हालत से निकाल सकती है। ओह! कैसी तरसनाक गुलामी! ऐसी भयानक गुलामी से निकलने के लिए विशेष सम्मान के योग्य परलोक निवासी श्रीमान देवत्व सिंह जी व्रती कर्मचारी देव समाज ने श्री देवगुरु भगवान के देव प्रभावों के असरों में आकर अपने एक पत्र तिथि 28 अक्तूबर 1906 में एक साधक को एक खास सुख लालसा से छुटकारा पाने के लिए जो साधन करने के लिए लिखे थे, वो मैं यहां उन जनों के लाभ के लिए जो एक वा दूसरे नीच सुख की गुलामी से छुटकारा पाने के लिए सच्चे दिल से इच्छुक हों, दर्ज करता हूँ :–

प्राय: कुत्ते की जीवनी शक्ति के भीतर एक ऐसा भाव बहुत जबरदस्त तौर से मौजूद है कि जब कोई बिल्ली उसकी निगाह के अंदर आ जाती है, तो वह विवश सारे ज़ोर के साथ उसकी तरफ लपकता है और अगर वह उसको पकड़ने

का मौका पा सके, तो अकसर उसे अज़ाब पहुंचाने के इलावा, वो उसे जान तक से भी मार देता है। हालांकि बिल्ली के सामने आने से पहले वह चुपचाप आराम से पड़ा था और उसको उस जज्बे से कोई बेआरामी या बेचैनी नहीं थी। अगरचे ऐसे शिकारी जानवर भी मौजूद हैं जो अपनी भूख मिटाने के लिए भी दूसरे जानवरों को मारते हैं और इस मतलब के लिए जानवरों को ढूंढते फिरते है मगर कुत्ते अमूमन ऐसा नहीं करते। यहाँ एक कुत्ता भूखा है, वह भी अपनी भूख मिटाने के लिए किसी जानवर को नहीं मारता मगर तो भी बिल्ली और चूहे मारने का उसे इतना शौक है कि नज़र आने की देर है, फिर विवश कूद पड़ता है। अब अगर यह चाहो कि कुत्ते के जरिये बिल्ली या चूहे की मौत न हो, तो या तो बिल्ली या चूहे को इसकी निगाह से परे रखो या कुत्ते को किसी ऐसी मज़बूत जंजीर से बांधो कि वो दूसरे जानवरों पर हमला न कर सके तो बिल्ली या चूहा बच सकता है। कुत्ते को झिड़कने या सोटी से मारने से बहुत कम फायदा होता है।

सो तुम्हारी नीच सुख लालसा भी तो उपरोक्त कहानी की तरह है कि या तो आला बोध की जंजीर तैयार करके आत्मा को उससे बांधा जावे या फिर उस सामान की नज़र से अलग रखा जावे जिसको देखने से वो इच्छा भड़कती है और फिर धीरे धीरे आला बोध की जंजीर तैयार की जावे। वरना इसमें कुछ शक नहीं कि बार बार ऐसी क्रियाओं से आत्मा और जिस्म दोनों कमज़ोर होते हैं और यह तो बहुत ही तरसनाक हालत है कि इंसान अपना आप मालिक न हो और निहायत नीच दर्जे की कोई इच्छा इस पर हकूमत करे और वो उसका गुलाम हो। कसरत से ऐसे जन हैं कि जो श्री देवगुरु भगवान की शक्ति पाकर ऐसी नीच गुलामी से हमेशा के लिए उद्धार अथवा मोक्ष लाभ कर चुके हैं। जब कोई धर्म शक्ति आत्मा में उस दर्जे पैदा हो जाएगी कि वह सारे वजूद पर हुकमरान हो सकेगी, तो फिर यह हालत न रहेगी। मायूस और दुखी होने की निसबत अगर देव प्रभावों की प्राप्ति के द्वारा धर्म भावों को उत्पन्न करने और बढ़ाने का साधन बढ़ाया जाए (जो कि शुरु शुरु में देव प्रभावदायक संगत के मिलने और नीचे खींचने वाले सामानों से अलग रहने पर चल सकता है) तो बहुत लाभदायक हो सकता है।

निरन्तर सेवाशील

विशेष सम्मान के योग्य श्रीमान डा० मुँशा सिंह जी (परमपुर/राजस्थान) जो कि गुरू महाराज के प्रति हार्दिक श्रद्धा रखने वाले व मिशन के लम्बे काल से सहयोगी व सेवाकारी हैं। वे करीब 20 वर्षों से भी ज्यादा समय से सभाएँ करवाने में प्रबन्धकारी होते रहे हैं, जिसमें प्रोग्रामों के दौरान धर्म सम्बन्धियों के चाय, नाशते, खाने आदि का सब प्रबन्ध बड़ी खुशी से अपने खर्च पर करते हैं। स्थानीय मन्दिर पदमपुर में पिछले दिनों कुछ जरूरी सुविधाओं हेतु उन्होंने कई हज़ार रूपये और खर्च किए हैं। इस बार सभाओं के बाद बाहर से आए धर्म सम्बन्धियों को उन्होंने सहर्ष उपहार (चदद्र) आदि भी भेंट किए।

भगवान् देवात्मा के परम उपकार

हे देव! सारी दुनिया में अरबों की आबादी है। पर महा सौभाग्य से मुझे आपके श्री चरणों में आने का महा अधिकार मिल गया। मैंने इस महा सौभाग्य को पाकर उसे कितना सफल किया वह एक अलग विषय है, परंतु जब मैं आपकी देव ज्योति से ज्योतिर्मान आपके शिष्यों को देखता हूँ और उनके मुकाबले में आम इंसानियत को देखता हूँ तो जमीन आसमान का अंतर दिखाई देता है।

1) जब मैं यह देखता हूँ कि मुझे देव समाजी परिवार में जन्म लेने का सौभाग्य मिला जिसके कारण मैं उन महा भयानक तबाह कर देने वाले, अंधा बनाने वाले, मिथ्या विश्वासों के जाल में नहीं फंसा कि जिन मोटे मिथ्या विश्वासों में बड़े-बड़े पढ़े लिखे, विज्ञान पढ़ाने वाले, पढ़ने वाले और वैज्ञानिक तक फंसे हुए हैं। तो मैं क्यों ना बेबस आपके चरणों में गिर जाऊँ। कोई कृतज्ञ पुरुष होता तो आपसे यही महा उपकार पाकर आपके लिए फना हो जाता। मैं मिथ्या के भयानक गड्ढों में गिरने से बच गया। मंदिर, गुरुद्वारों, मस्जिद आदि स्थानों पर अपना मत्था रगड़ने से बच गया। मैं उन बच्चों जैसी झूठी कहानियों में विश्वास करने से बच गया और उन पर विश्वास करने वालों पर तरस खाने लगा कि जिनमें वह अपने अवतार को सूरज खाने वाला, पहाड़ उठाने वाला, बड़े पत्थर को हाथ से रोकने वाला, मरे हुए जानवरों को, इंसानों को जिंदा करने वाला, आदि करामात करने वाला बताते हैं। मैं पुनर्जन्म और आवागमन के मिथ्या विश्वासों से बच गया। मैं कल्पित देवीओं और कल्पित देवताओं, देव जीवन से शून्य गुरू, पीर आदि के चक्कर से बच गया और मुझे पूजा करने के लिए सत्य उपास्य देव मिल गए। अगर मैं आपके श्री चरणों में ना आता तो इन मिथ्या विश्वासों ने मेरा चूरा कर देना था। मैं आपके गुण कैसे गाऊँ। मैं आपके उपकारों से ऋणी महसूस करके कुछ ऋण परिशोध करूं और आपका सच्चा शिष्य बन सकूं।

2) हे देव! दूसरा महा उपकार जो आपने मुझ पर किया है वह है मोटे पापों से मेरी रक्षा की गारंटी हो जाना। बेशक मेरे पूर्वज उन मोटे पापों से बचे हुए थे कि जिन को छोड़कर देव समाज के सेवक बनते है, परंतु मैं यह दावे के साथ कह सकता हूँ कि अगर आपके श्री चरणों में ना आता तो बेईमान होता, झूठा और ठग होता। एक एक छोटी सी चीज़ व पैसे के लिए बेईमान बन जाता। मांसाहार व अंडे खाने वाला बन जाता, क्योंकि ऐसा वातावरण भी हमारे आसपास कई बार बन जाता है। कम से कम इन पापों के प्रति घोर घृणा पैदा करके आपने मेरी रक्षा की है। आपका यह भी उपकार मेरे अस्तित्त्व पर है।

3) हे देव! आपकी देव ज्योति की किरणें जब देव समाज के वातावरण में मुझे मिली हैं, तो एक एक बार मुझे नेचर के चारों जगत अपने उपकारी दिखाई देने लगे हैं। मैं उनका ऋण अपने ऊपर महसूस करने लगा हूं। मैं उन का ऋण परिशोध होता हुआ ना देख कर व्याकुल भी हो जाता हूं। यह सिर्फ आपका ही उपकार है कि मुझे अपने उपकारी दिखाई देते हैं। वरना मैंने कहां उपकार देखने थे।

जब कोई किसी पौधें को तोड़ता मरोड़ता है, जब कोई पशुओं को मारता है और उन्हें मार मार कर खाता है या किसी बेजान वस्तु को जैसे हवा पानी आदि को हानि करता है तो मैं व्याकुल हो जाता हूं। जब मैं सूखे पौधों को देखता हूं तब मैं बेबस उन्हें पानी देने के लिए मजबूर होता हूं। आप ही मुझें चारों जगतों के उपकारों के दिखाने वाले हैं। भौतिक जगत के हवा, पानी, सूर्य, धरती, पेन, पेंसिल, पंखे, घर आदि, पौधों का ऑक्सीजन देना, अनाज, मेवे, रोटी, चावल देना, दवाइयां देना, धूप में छांव देना और जीवन दायक संबंध उपकारी दिखाई देता है तो आप की मेहरबानी से। अगर पशु जगत का दूध देना पॉलिनेशन करना, इंसानों को जिंदा रखना, पशुओं के द्वारा विकास क्रम में आना, उपकारी दिखाई देता है तो आपकी कृपा से। अगर माता-पिता, दादा-दादी, नाना-नानी, भाई-बहन, नौकर, देशवासी, विदेशी, पुस्तके लिखने वाले, डॉक्टर, इंजीनियर, वकील सारा मनुष्य मात्र उपकारी दिखाई देता है तो आपकी कृपा से। आपकी कृपा से इन जगहों के उपकार और बदले में अपनी स्वार्थी प्रकृति देखकर घमंड और वहशीपन दूर होता है तो आपकी कृपा का फल है। फिर मैं आपके श्री चरणों में क्यों ना गिरूँ, आपके उपकारी रूप की महिमा क्यों न गाऊँ, आपकी पूजा क्यों ना करूं और चारों जगतों के जिन जिन अस्तित्वों की सेवा करने का आप आदेश देते हैं वह सेवा क्यों ना करूं।

4) भक्ति भाजन भगवान! इसके अलावा आपने जो परम उपकार किया है, वह यह है कि आपने मुझे ऐसी समाज प्रदान की है कि जो अद्वितीय धर्म समाज है। इस समाज में आपके देव प्रभावों का कार्य है। इसकी सभाओं ने हर बार मेरी आत्मा को प्रभावित कर मुझे देव प्रभावों का दान दिया है और उच्च प्रेरणाओं से भरा है। इसी समाज और आपकी पुस्तकों से मैंने सत्य धर्म और विज्ञानमूलक धर्म का सच्चा ज्ञान लाभ किया है। मुझे आपने हितकर परम कल्ययाणकारी सर्वश्रेष्ठ भजन गाने के लिए दिए हैं। आपने हमारे परिवारिक अनुष्ठान सम्पन्न करने के लिए महा कल्याणकारी देव समाज अनुष्ठान विधि दी है। आपने पूजनीय देव शास्त्र, मुझमें देव जीवन का विकास, अद्वितीय त्याग, चार महा तत्व और सैंकड़ों किताबों का अमूल्य खजाना प्रदान किया है। आपने महान फरिश्ते कर्मचारी और सेवक दल दिया है, जिनके बीच रहकर बेबहा बरकतें मिली हैं। आपने सत्य धर्म, आत्मा और उसके बनने बिगड़ने, उसके विकास करने, परलोक संबंधी और संबंध तत्व की अद्वितीय शिक्षा दी है जो नेचर और उसके अटल नियमों पर आधारित है और कल्पना रहित है।

5) हे देव! सबसे बड़ा वरदान जो मुझे मिला है वह है मुझे सत्य उपास्य देव, एकमात्र इष्ट और देव जीवन धारी देवात्मा मिले है। जो मेरी भक्ति और पूजा के सच्चे अधिकारी हैं। अगर भविष्य में कभी मैं आपकी ज्योति शक्ति पाकर आपकी सच्ची आत्मिक पूजा करने के योग्य बन गया, तो मेरे महा सौभाग्य के और परम कल्याण के द्वार खुल जाएंगे, क्योंकि मेरे सारे संबंधों में आपका संबंध ही एकमात्र विष रहित और परम आवश्यक जीवन दायक है।

आपका तुच्छ सेवक

Published on 5th of the month
20
Regd. Postal No.CHD /0077/ 2021-2023
Regd. with Registrar News Paper No. 72258/88

शुभ संग्राम

विशेष सम्मान के योग्य श्रीमान बलबहादुर सिंह जी कुछ विशेष परिवारिक जिम्मेवारियों के कारण अपनी काफी व्यस्त जीवन-चर्या में से कृपापूर्वक सभा-सत्संग करवाने के लिए समय देते रहते हैं। जून माह की 18 तारीख शाम से 21 तारीख तक उन्होंने मल्लेकां (सिरसा) में सभाएँ करवाई। यहाँ ठहरकर उन्होंने 6 सभाओं की कृपा की जिसमें देव समाज की शिक्षा के अनेकों पहलुओं पर प्रकाश डाला। सभाओं में गुरू महाराज के सम्बन्ध में श्रीमान जागीर सिंह जी व श्रीमान गुरदेव राज जी ने भजनों का गान किया, सुबह-शाम सभाओं में सेवक व श्रद्धालु जनों की 20 से लेकर 30 जनों की हाज़री होती रही, सभाओं में अच्छा वातावरण बनता रहा। सभापति जी सभाओं के अलावा भी धर्म सम्बन्धिों से मिलकर हितकर बातचीत कर प्रोत्साहन देते रहे, उन्होंने मन्दिर के निर्माण कार्य का भी अवलोकन किया। यहाँ पर धर्म सम्बन्धियों ने 2010/- रूपये का दान दिया।

श्रीमान जी कुछ धर्म सम्बन्धियों के साथ मन्दिर की जगह की नव रजिस्टरी कार्य हेतु 21-6-23 को व बाद में 28-6-23 को सिरसा में सम्बन्धित आफिस गये। 23.6.2023 को पदमपुर में सभाएँ कराने के लिए गए। बीच रास्ते श्री गँगानगर में कुछ समय रुके। वहाँ से श्रीमान दिवान जी व गोपाल कृष्ण जी भी उनके साथ रवाना हुए। सभा के समय तक गजसिंहपुर से श्रीमान दुनीचन्द जी, श्रीमान खेमचन्द जी व गंगा नगर से श्रीमान सुरेन्द्र भाटिया जी भी पहुँच गये थे। स्थानीय धर्म सम्बन्धियों श्रीमान गुरचरण सिंह जी व श्रीमान सुभाष सेतिया जी बहुत सुरीली आवाज से भजनों का गान करते रहे। मल्लेका में श्रीमान गोपाल जी घरों में विजिट का काम करते हैं, जिससे सेवकों में उत्साह बढ़ा है। ईतवार की सभा भी वहां पर होती है।

सभापति जी कृपा पूर्वक गुरू महाराज की शिक्षा के गूढ़ तत्त्वों को भी हम अबोधी जनों को साधारण से साधारण भाषा में समझाते रहे।

सभापति जी ने मनुष्य जीवन का लक्ष्य

शेष पृष्ठ 8 में

श्रीमान बलदेव सिंह जी, एम. ए, (लाईफ़ वर्कर) मंत्री-Dev Samaj Global, प्रिंटर, पब्लिशर और मालिक "धर्म जीवन" ने ***Surya Laser Den, Chandigarh*** *से छपवाकर म. नं. 3154, सैक्टर 21-डी, चण्डीगढ़ से प्रकाशित किया।*

Book Posts